अध्याय–8
राजस्थान की आधुनिक कला

राजस्थान की आधुनिक कला – भारतीय चित्रकला में आधुनिक कला परम्पराओं की शुरूआत उन्नीसवी शताब्दी के आरम्भ में हो गई थी। आधुनिक चित्र शैली की स्थापना में उसके विकास में कलकता, बम्बई (मुम्बई) और दिल्ली के कला केन्द्रों तथा कलाकारो का विशेष योगदान रहा है। भारतीय आधुनिक कला परम्पराओं में दो विभिन्न वृतियां महत्वपूर्ण थी। प्रथम बंगाल स्कूल से प्रेरित अनुकरणात्मक परम्परा तथा द्वितीय रूचि अनुसार कला रूपो में भारतीय शास्त्रीय मूल्यों को भावात्मक रूपों में सृजन करने की प्रवत्ति। इन्हीं दोनो प्रवृत्तियों ने राजस्थान की आधुनिक कला के उद्भव में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राजस्थान कला के क्षेत्र में विशेष स्थान रखता है। यहाँ लघु चित्रण की परम्परा अत्यन्त समृद्धशाली तथा गौरवपूर्ण है। उत्कृष्ट चित्र शैली राजस्थान की पहचान रही है। राजस्थान की अनेक उपशैलियां अपने निजी कला मूल्यों को धारण किए कला के वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान रखती है। परम्परागत शैलियो ने राजस्थान की आधुनिक कला प्रेरणा में अपने महत्व को आज भी सुरक्षित रखा है। जयपुर के महाराजा सवाई रामसिंह ने मदरसा–ए–हुनरी 1856/57 के नाम से कला संस्थान की स्थापना की जिसे महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट कहा जाता है। यह संस्थान स्थापना काल के आरम्भ में हस्तकला संबंधी कला का अध्ययन करवाया करता था। इस संस्थान के प्रथम प्राचार्य सी.एस. वैलेन्टाईन बने जो मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट से आये थे। ये मद्रास से कई कलाकार अपने साथ लाये। परन्तु राजस्थान में आधुनिक कला की स्वस्थ परम्पराएं तब आरम्भ हुई जब असित कुमार हल्दार, शैलेन्द्रनाथ डे व के.के.मुखर्जी के निर्देशन में यहाँ पर अनेक कलाकर टेम्परा तथा वॉश पद्वति में भारतीय कला रूपों का चित्रण करने लगे। जिसमें रामगोपाल विजयवर्गीय अग्रणीय चित्रकार थे। रामगोपाल विजयवर्गीय बंगाल पुनर्जागरण के कला मूल्यों के आधार पर साहित्यिक उपमानों तथा देशज तत्वों को अपने चित्र में स्थान देकर इस कला यात्रा को आगे बढ़ाया। श्री भूर सिंह शेखावत, शिव नारायण चौगान ने अपनी यथार्थपरक शैली में चित्र यात्रा आरम्भ की। श्री कृपाल सिंह शेखावत ने जो कि बंगाल स्कूल के प्रतिभाशाली चित्रकार रहे, इन्होंने अपनी कला शैली में जयपुर फ्रेस्को पद्वति को अपना कर अपनी विशेष पहचान बनाई।

देवकी नन्दन शर्मा भी शैलेन्द्रनाथ डे के शिष्य रहे थे। रामनिवास वर्मा तथा गोवर्धन लाल जोशी ने परम्परागत लोक प्रभाव को आत्मसात कर अपना चित्रण कार्य किया।

इसी प्रकार आर.वी.सांखलकर, बी.सी.गुई, मोनी सान्याल पी.एन.चोयल, द्वारका प्रसाद शर्मा आदि अनेक चित्रकारों ने राजस्थान में आधुनिक चित्रकला की यात्रा को आगे बढ़ाया।

राजस्थान की आधुनिक कला के विकास में वस्तुतः कई प्रवृत्तियां क्रियाशील रही जिनमें पहली प्रवृत्ति के कलाकार वो कलाकार है, जिनका प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से बंगाल स्कूल से संपर्क रहा, इन कलाकारों ने राजस्थान की धरती पर भी बंगाल स्कूल की महक फैला दी। भारतीय पौराणिक ग्रंथों के आधार पर राजस्थान में भी टेम्परा तथा वॉश तकनीक पर चित्र बनाये जाने लगे, जिनमें कई प्रयोगधर्मी चित्रकारों ने स्थानीय कला तकनीक तथा लोक तत्वों को सम्मिलित कर कला के नये प्रतिमान स्थापित किए जिनमें रामगोपाल विजयवर्गीय तथा कृपालसिंह शेखावत प्रमुख व सिद्धहस्त कलाकार थे। दूसरी

प्रवृती में वे कलाकार आते है जिन्होंने परम्परागत लघु चित्रों को आधार मानकर आधुनिक प्रयोग राजस्थानी चित्रकला में किए जिनमें सुमहेन्द्र, कृपाल सिंह शेखावत तथा बाद के कलाकारों में कन्हैयालाल वर्मा तथा नाथूलाल वर्मा प्रमुख थे। तीसरी प्रवृत्ति में वे चित्रकार आते हैं, जिन्होने यथार्थपरक शैली में अपना चित्रण कार्य किया तथा आधुनिक राजस्थानी चित्रकला को लोक रंजन हेतु जन मानस के सामने रखा। इस प्रकार के चित्रकारो में श्री भूरसिंह शेखावत, श्री शिवनारायण चौगौन, बी. सी. गुई, द्वारका प्रसाद शर्मा का नाम अग्रणीय है।

उक्त तीन प्रवृत्तियों के अतिरिक्त एक अन्य प्रवृत्ति आधुनिक राजस्थानी चित्रकला में हुई जिसने रचना धर्मिता को नये आयाम प्रदान किए। इन विकसित चित्रकारों ने कला संसार को नये ढ़ंग से समझा तथा प्रस्तुत किया। इन कलाकरो ने स्व रूचि के अनुसार रूपाकारों की रचना की तथा राजस्थान में आधुनिक कला को सशक्त सम्बल प्रदान किया। इस प्रवृत्ति के चित्रकारों में र. वी. सांखलकर, पी.एन.चोयल, रघुनन्दन शर्मा, देवकीनन्दन शर्मा, राम जैसवाल, ओमदत्त उपाध्याय, सुरेश शर्मा, सी. एस. मेहता, लक्ष्मी लाल वर्मा आदि प्रमुख रहे।

आधुनिक राजस्थानी चित्रकला के विकास क्रम में उपरोक्त चित्रकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। अपने परम्परागत मूल्यों तथा नवीन प्रयोग धर्मिता से राजस्थानी आधुनिक कला की राष्ट्रीय स्तर पर पहचान स्थापित की। इस आधुनिक दौर के उत्तरकाल में राजस्थान में राजस्थान ललित कला अकादमी 1956/57 की स्थापना हो गई। जिससे राजस्थान की कला उत्तरोत्तर विकास करती गई। अकादमी द्वारा चित्रकला संबंधी अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाने लगे। कई प्रतिभा सम्पन्न कलाकार आधुनिक कला जगत से जुड़ते गए तथा कला उतरोत्तर समृद्धि के पथ पर अग्रसर होने लगी।

आधुनिक काल के प्रमुख चित्रकार

रामगोपाल विजय वर्गीय– (1905–2003) पद्मश्री रामगोपाल विजयवर्गीय राजस्थान में आधुनिक कला जगत के स्तम्भ कलाकार थे। राजस्थान में बंगाल स्कूल की कला परम्परा के प्रबल समर्थक थे। रामगोपाल विजयवर्गीय का जन्म सवाई माधोपुर के छोटे से गांव बालेर में सन् 1905 में हुआ। आपकी आरम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। साधन सम्पन्न परिवार में व्यावसायिक परिवेश होने के बावजूद आपका सहज हृद्य कला के प्रति आकर्षित रहा। आपकी कला के प्रति अगाध समर्पण को देख आपको कला की विधिवत शिक्षा दिलवाने हेतु महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट में प्रवेश दिलाया। यहाँ शैलेन्द्र नाथ डे के अधीन रहकर आपने कला शिक्षा प्राप्त की तथा 1924 में चित्रकला में डिप्लोमा प्राप्त किया।

डिप्लोमा प्राप्त करने के पश्चात् विभिन्न पत्रिकाओं हेतु चित्र बनाने का कार्य आरम्भ कर दिया तथा बंगाल स्कूल व अजन्ता की कला से प्रेरणा लेकर टेम्परा तथा वॉश तकनीक दोनो में ही चित्रण कार्य आरंभ कर दिया। 1928 के पश्चात् आपकी चित्र प्रदर्शनियाँ आयोजित होने लगी। विजयवर्गीय के चित्रों में सरलता पूर्ण गति संचालन तथा लयात्मक प्रस्तुति बहुत श्रेष्ठ रूप में उभर कर आयी है। चित्रों में रंगो की संगति माधुर्य के साथ चित्रों को सजीव कर देती है। नारी चित्रण में विजयवर्गीय सिद्वहस्त थे। आपने लयात्मक मुद्रा, शारीरिक सुडौलता का माधुर्य, सरल व प्रवाह पूर्ण रेखांकन कर आपने चित्र की उच्च कोटि की संज्ञा प्रदान की है। रेखांकन के पश्चात् रंग भरने की तकनीक भी इनकी अनोखी थी। जिसमें विशिष्ट महत्व वाले चित्र भाग को स्पष्ट प्रभाव के साथ सजग रंगो में बनाया जाता था तथा अन्य भाग को हल्के रंग तथा रेखाओं द्वारा उभारते थे। विजयवर्गीय ने वॉश तथा टेम्परा तकनीक का मिश्रण करके अपनी एक नई तकनीक का विकास किया। टेम्परा रंगो के साथ माध्यम के रूप में अण्डे की जर्दी या सफेदी, गोंद, ग्लिसरीन, आदि का प्रयोग किया जाता रहा है, आपने पायस के रूप में गोंद का प्रयोग किया।

गीतगोविन्द चित्र श्रृंखला, निकुंज लीला, खण्डिता राधा, मानिनी राधा एवं प्रतीक्षारत राधा इस तकनीक के प्रमुख उदाहरण है।

आपकी चित्र शैली में राजस्थान का देशज प्रभाव, अजन्ता तथा बंगाली शैली का प्रभाव रहा है परन्तु इन प्रभावों से आपकी मौलिक शैली का स्वरूप प्रभावित नहीं हुआ वरन् शैली में विशिष्ट तत्वों के रूप में विद्यमान रहे। गीतगोविन्द, उमर खैयाम, मेघदूत, (चित्र संख्या–1) रामायण, महाभारत जातक कथाएं व रागमाला पर आधारित चित्रों की श्रृंखला आपकी व्यक्तिगत शैली के प्रमुख उदाहरण है। चित्रों में वक्र शारीरिक मुद्राएं, मधुर मुस्कान अधखुली आंखे, पतली लम्बी

बाहें तथा अजन्ता के समान हाथ तथा अंगुलियों की भावात्मक मुद्राएं आपकी शैली की विशिष्ट पहचान है। आपके बनाये चित्रों में नारी चित्रण की बहुलता है। रामगोपाल विजयवर्गीय का मानना था कि ''नारी ब्रह्म की आल्हादिनी शक्ति है। कृष्ण ब्रह्म है और रासेश्वरी राधा माया, दोनों का मिलन रासलीला है। रास से रस का जन्म होता है तथा रस ही ब्रह्म है।''

रामगोपाल विजयवर्गीय ने चित्रों के विषय रूप में

चित्र संख्या–1 मेघदूत

विधिवता को अंगीकार किया। ग्रामीण एवं शहरी दोनो ही जीवन को अपने चित्रों में साकार किया यथा ग्रामीण बालाएं, वृद्ध किसान, मजदूर, पशु पक्षी, तमाशा दिखाते मदारी, गुब्बारेवाला, सावन, तीज व गणगौर आदि सामान्य जीवन के चित्र प्रमुख है।

धार्मिक विषयों में राम की वन यात्रा, विश्राम करते राम व सीता, जटायू वध विरही राम, लक्ष्मण व सूर्पणखा, वानरों के साथ राम, धृतराष्ट्र गांधारी, कृष्ण–सुदामा, गंगावतरण, अर्जुन व उर्वशी, चतुर्भज विष्णु, शिवमोह साधु का तप आदि प्रतिनिधि चित्रों के अतिरिक्त अनेकों धार्मिक चित्र बनाऐ।

साहित्य आधारित चित्रों में मेघदूत, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, विक्रमोवंशीय, कुमार संभव, कादम्बरी, गीत गोविन्द, ऋतु संहार तथा बिहारी सतसई समेत अनेक साहित्य रचनाओं के आधार पर चित्र सृजन किया। पद्मश्री विष्णु श्रीधर वाकणकर के शब्दो में ''विजयवर्गीय के मेघदूत के चित्रों में भावगम्यता उतनी ही मधुर है जितनी कालीदास की कविता है।''

विजयवर्गीय श्रेष्ठ कलाकार तो थे ही आपका साहित्य लेखन भी उच्च श्रेणी का था। साहित्य की प्रायः हर विधा यथा काव्य, कहानी, कथा संग्रह रिपोर्ताज, व्यंग्य, आदि में लेखन कार्य किया है, आपके काव्य संग्रह अलकावली, चिंगारियां, चित्रगीतिका अत्यन्त श्रेष्ठ तथा ख्याति प्राप्त है। कथा संग्रह में मेंहदी लगे हाथ, काजल भरी आंखे, व्यंग्यात्मक रचना,''शिवजी की अमेरिका यात्रा'' कहानी संग्रह में "मध्यम मार्ग" आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

रामगोपाल विजयवर्गीय राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट जयपुर के प्राचार्य रहे। 1970 में आपको राजस्थान ललित कला अकादमी का सर्वोच्च कला सम्मान ''कलाविद'' मिला। 1984 में आपको भारत सरकार द्वारा पद्मश्री का सम्मान मिला। 1989 में राष्ट्रीय ललित अकादमी द्वारा 'रत्न सदस्यता' से सम्मानित किया गया।

रामगोपाल विजयवर्गीय का जीवन कला के प्रति अगाध आस्था के सर्जन में ही व्यतीत हुआ। जो कला यात्रा जीवन के आरम्भकाल से शुरू की वह जीवन पर्यन्त अनवरत चलती रही। आपका 98 वर्ष की आयु में सन् 2003 को देहावसान हो गया। आपने राजस्थान में आधुनिक कला सर्जन को जो भूमि प्रदान की वह आज विभिन्न सुंदर फूलों से महक रही है।

बी. सी. गुई – भवानी चरण गुई राजस्थान की कला में प्रकृति चित्रण से पहचाने जाते हैं। आपने मेयो कॉलेज अजमेर में कला शिक्षक के रूप में लम्बे समय तक कार्य किया। बी.सी. गुई का जन्म बंगाली परिवार में 1910 में वाराणसी में हुआ। आपने चित्रकला में लखनऊ स्कूल आर्ट से डिप्लोमा प्राप्त किया।

प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण आपका प्रिय विषय रहा। बंगाल के पुनर्जागरण काल के पश्चात् कला में हो रहे नवीन कला प्रयोग की तरफ आकृष्ट होकर आपने विविधतापूर्ण चित्रण कार्य किया। राजस्थान के जन–जीवन पर यूरोपीय पद्धति में यथार्थवादी चित्रण जल रंगो के माध्यम से किया जो

चित्र संख्या–2 डाउन द केदारनाथ टेम्पल

संयोजन तथा रंगो की सौम्य संगति की दृष्टि से उच्चकोटि के है। प्रकृति के विविध रूपों को आपने पेंसिल, जल रंग तथा तैल रंगो से बहुत सूक्ष्म अध्ययन के साथ चित्रित किया। आपने चित्रों में नाईफ से पेच पद्धति द्वारा भी चित्रों का सृजन किया। विषय के रूप में प्राकृतिक चित्रों की बहुलता रही लेकिन आपने हर प्रकार के विषयों को लेकर चित्रण किया। राजस्थान की जीवन शैली पर आधारित अनेक चित्र बनाए। धार्मिक विषयों के लेकर भी अपना चित्रण कार्य किया जिनमें शेषलीला, शकुन्तला, बुद्ध निर्वाण, मीरा का विषपान, कालिदास, प्रतीक्षा, शिव ताण्डव, राधा–कृष्ण, काली आदि चित्र प्रसिद्ध हैं। (चित्र संख्या–2)

कला के उच्च शिक्षण हेतु बी.सी.गुई लन्दन भी गये जहाँ से रॉयल सोसाइटी ऑफ आर्ट्स तथा स्लेड स्कूल ऑफ सेन्ट्रल आर्ट एण्ड फैलो से कला चित्रण की विशेष दक्षता प्राप्त की।

अनेक राज्यों की कला गतिविधियों में आपको पुरस्कृत किया गया। पंजाब सरकार द्वारा रजत पदक, फाईन आर्ट सोसाईटी लाहौर, महाराजा मैसूर, एकेडमी ऑफ फाईन आर्ट कोलकता द्वारा पुरस्कृत किये गये। श्री गुई ललित कला अकादमी दिल्ली के सदस्य भी रहे तथा राजस्थान ललित कला अकादमी के उपाध्यक्ष तथा फैलो रहे। आप रॉयल आर्ट सोसाईटी, लन्दन के भी सदस्य रहे। आपके चित्र भारत सहित अनेक देशों में निजी संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।

1995 में आपकी कला यात्रा पर राजस्थान ललित कला आकदमी द्वारा एक लघु फिल्म का निर्माण भी किया गया।

भूरसिंह शेखावत – भूरसिंह राजस्थानी चित्रकारो में यथार्थवादी कलाकार के रूप में विख्यात थे। इनकी आरम्भिक शिक्षा राजस्थान के ही पिलानी में हुई। आगे के अध्ययन के लिए ये मुम्बई चले गये जहाँ पर इन्होने केतकर आर्ट इन्स्टीटयूट तथा सर जे.जे.स्कूल ऑफ आर्ट से कलाशिक्षा तथा चार वर्षीय कला डिप्लोमा की उपाधि प्राप्त की। (1932–37 ई.) मुम्बई से अध्ययन समाप्त कर पुनः पिलानी में आकर शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक रूप में कार्य करने लगे। पिलानी में बिड़ला की शिक्षण संस्थान में अध्यापन करते हुए अनेक चित्रों का निर्माण किया तथा नये कलाकारों को तराशने लगे। गांधीजी के साथ प्रवास के समय उनके जीवन के अनेक प्रसंगों को अपने चित्रों में उकेरा। ये एक सिद्धहस्त कलाकार थे। इनका कलाकार ह्रद्य प्राकृतिक परिवेश में अधिक रमता था। अनेक बार आपने पहाड़ी क्षेत्र की यात्राएं

चित्र संख्या–3 बुनकर (भूर सिंह शेखावत)

की तथा उनके प्राकृतिक सुरम्य वातावरण को चित्रों में पिरोया। (चित्र संख्या–3) चित्रों में विभिन्न विषयों पर इन्होने चित्रण कार्य किया इनका मानना था कि कला का क्षेत्र विशाल है इसको किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता। जितना महत्व जीवन के आनन्दपूर्ण क्षण का है उतना ही महत्व दु:खपूर्ण वेदना का भी है।

भूरसिंह शेखावत ने बिड़ला मंदिरों में तथा उनमें बने कक्षो में आन्तरिक सज्जा का कार्य भी किया, जिस हेतु दिल्ली, गया, प्रयाग, पटना आदि में बने मंदिरो में भी चित्रण के लिए गये। इन्होने कलकता, दिल्ली, इलाहाबाद, अजमेर सहित अनेक स्थानों पर अपने चित्रों की प्रदर्शनियाँ आयोजित की। अनेक कला संस्थानों की वार्षिक प्रदर्शनियों में भाग लिया यथा राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी दिल्ली, आईफेक्स दिल्ली, एकेडमी ऑफ फाईन आर्ट कलकता, बोम्बे आर्ट सोसाईटी, राजस्थान ललित कला अकादमी आदि। कई संस्थानो में आपने पुरस्कार भी प्राप्त किये। इनकी प्रसिद्धि का अनुमान इस बात से ही लगता है कि राजस्थान के कई आधुनिक कलाकार इनसे कला शिक्षा ले चुके हैं तथा गुरू के रूप में आपका नाम लेकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते है।

आपके चित्रों में विषयों की विधिवता होते हुए भी, राजस्थान की संस्कृति तथा सामाजिक जीवन की एक रूपता स्वतः दिखाई पड़ती है। टेम्परा में चित्रण करना आपको अधिक प्रिय था। चित्रों की यथार्थ परक प्रस्तुति अत्यन्त प्रभावकारी तथा कौशल लिए हुए है। ग्रामीण दृश्यों को चित्रों में पिरोना आपकी अद्भूत प्रतिभा है। चित्र का कोना तक सजीवता एवं रोचकता लिए है।

भूरसिंह शेखावत के चित्रों में ग्रामीण परिवेश के विषय प्रधानता लिए हुए हैं जैसे – सूत कातते, पानी भरते, आरा मशीन चलाते, खाना बनाते, चक्की चलाते, हाट बाजार, जुलाहा, कृषक दम्पति, गणगौर पूजन, गाड़िया लुहार, मंगल कामना, गोधूली, ऊंट जुगाली करते, दो दोस्त, विगत युग के कर्णधार, विश्राम करते आदि। भूरसिंह शेखावत बहुत सहृदय व्यक्तित्व के धनी थे। शांत स्वभाव से कला की साधना करना उनके जीवन का मूल मंत्र था। हालांकि वे यथार्थवादी चित्रकार रहे लेकिन राजस्थानी कला जगत को कई प्रयोगधर्मी चित्रकार इन्होने दिये हैं।

गोवर्धन लाल जोशी–

राजस्थान चित्रकला इतिहास में 'भीलों के चितेरा' नाम से प्रसिद्ध गोवर्धनलाल जोशी को "बाबा" कह कर संबोधित किया जाता था। आपका जन्म उदयपुर के कांकरोली जिले में सन् 1914 को हुआ था। कांकरोली के द्वारकाधीश मंदिर में भित्ति चित्रों तथा पिछवाईयों की तरफ आकर्षिक होकर इनका मन भी चित्रकला की तरफ झुक गया और अपनी समझ के अनुसार चित्रकारी आरम्भ की। इसी आकर्षण के कारण नाथद्वारा शैली के चित्रकार घासीलाल के संपर्क में आये, इन्होने गोवर्धन लाल जोशी को रेखाओं के महत्व तथा रंगो की प्रकृति से ज्ञान करवाया तथा रंगो को घोटने तथा रेखांकन का अच्छा अभ्यास करवाया। जिनसे गोवर्धन लाल जोशी की कला उत्तरोत्तर निखरती गई।

'बाबा' की कलात्मक प्रतिभा से प्रभावित होकर विद्या भवन उदयपुर ने शिक्षाविद् कालूलाल श्रीमाली की अनुशंसा पर कला शिक्षक पद पर नियुक्ति प्रदान की। इनकी कलात्मक अभिरूचि तथा चित्रात्मक कुशलता देख कला मर्मज्ञ कोरिन डेंट के कहने पर आप उच्च शिक्षा हेतु शांति निकेतन चले गये। जहाँ कला के विविध आयाम की जानकारी प्राप्त हुई। अवनीन्द्र नाथ ठाकुर तथा नन्दलाल बोस के सानिध्य से आपने रेखांकन पर निपुणता प्राप्त की। वहाँ से आने पर पुनः विद्याभवन में शिक्षण कार्य करने लगे तथा साथ ही चित्र सृजन की प्रक्रिया जारी रखी।

गोवर्धन लाल जोशी को घूम घूम कर रेखांकन करना अति प्रिय था, समीपवर्ती गांवों में कस्बों में जाकर भील जीवन पर आधारित अनेक रेखांकन आपने किये। भीलों के अतिरिक्त बंजारा, डांगिया, गाड़िया लुहार, गड़रियो का रेखांकन बड़े मनोयोग से करते थे। (चित्र संख्या–4) रेखांकन में एकाग्रचित चित्रण करते देख कर स्थानीय व्यक्तियों ने आपको 'बाबा' नाम से संबोधित करना प्रारंभ कर दिया। जो आपकी संज्ञात्मक पहचान बन गई।

चित्र संख्या–4 खलिहान की झांकी (गोवर्धनलाल जोशी)

आपने अनेक वर्णनात्मक प्रस्तुति के साथ चित्रण कार्य भी किया, जिसमें गणगौर की सवारी, पन्नाधाय, राणाप्रताप उल्लेखनीय है। सामाजिक जनजीवन पर, लोकोत्सव तीज त्यौहार तथा प्राकृतिक दृश्य संबंधी अनेक चित्र बनाये। आपके चित्रों के प्रयुक्त रंगो में चटक व घूसर दोनों प्रकार के रंग प्रयुक्त हुए लेकिन मिश्रित रंगो की चमक आपके चित्रों को अत्यन्त आकर्षक बना देती है। आपने पैराणिक व साहित्यिक विषयों पर भी अनेक चित्रण किए।

गोवर्धन लाल जोशी को राजस्थान ललित कला अकादमी ने कलाविद् की उपाधि से सम्मानित किया। आपको रतलाम प्रदर्शनी, मैसूर दशहरा प्रदर्शनी, त्रिवेन्द्रम कला प्रदर्शनी से पुरस्कार प्राप्त हुआ। आपको राष्ट्रीय सांस्कृतिक शोधवृति प्राप्त हुई तथा राजस्थान ललित कला अकादमी से भी पुरस्कार प्राप्त हुआ। राजस्थान ललित कला द्वारा फैलोशिप प्रदान की गई। आइफैक्स द्वारा भी पुरस्कार प्रदान किया। आपके लिखे गये लेखों का प्रकाशन भी किया गया तथा आकाशवाणी वार्ता कार्यक्रम भी प्रसारित हुए। आपके चित्र विभिन्न संग्राहलयो में सुरक्षित हैं। सन् 1998 में आपका देहवसान हो गया।

देवकीनन्दन शर्मा – देवकीनन्दन शर्मा राजस्थान के कला जगत में विशेष स्थान रखते हैं। स्नेहशील व्यवहार तथा सादगीपूर्ण जीवन से सभी साथी कलाकारों से आपके आत्मीय संबंध थे। तार्किक परिप्रेक्ष्य तथा पशु व पक्षियों के विविध रूपों से परिपूर्ण चित्रण के कारण कला जगत में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की।

चित्र संख्या–5 मोर (देवकीनन्दन शर्मा)

आपका जन्म अलवर जिले में 1917 ई. को हुआ। सन् 1936 में आपने महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट से कला डिप्लोमा प्राप्त किया। यहाँ पर अध्ययन के समय शैलेन्द्र नाथ डे के संपर्क में आये। आपने नन्दलाल बोस, विनोद बिहारी मुखर्जी के सानिध्य व निर्देशन में शांति निकेतन से फ्रेस्को तकनीक की बारीकियों को सीखा। अध्ययन के पश्चात् वनस्थली विद्यापीठ में कला शिक्षक के रूप में शिक्षण कार्य किया।

देवकीनन्दन शर्मा ने अपने चित्रों में परम्परागत सांस्कृतिक स्वरूप को सहेजा। आपके प्रसिद्ध चित्रों में बैलगाड़ी की यात्रा, ग्वाल कृष्ण, ढोला मारू, जुब्बेनिसा, स्नान, कबूतर, गिरगिट, कौए, मोर आदि विशेष महत्वपूर्ण है। मोर की अनेक मुद्राओं, रूपों व भावों को बड़ी कुशलता के साथ चित्रित किया है। (चित्र संख्या–5) राजस्थान के कलाकारों द्वारा आपको 'मोर का चितेरा' संज्ञा प्रदान की गई। आपने 1953 से वनस्थली विद्यापीठ में फ्रेस्को शिविर का आयोजन शुरू किया, जहाँ देश के ख्यातिनाम चित्रकार आकर भाग लेते थे। यह परम्परा आज भी अनवरत जारी है जो आपका ही प्रयास था। वनस्थली विद्यापीठ में फ्रेस्को के रूप में भारतीय कला जगत के महान चित्रकारों का काम आज भी देखने को मिलता है।

राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा आपको समय समय पर कई बार राज्य पुरस्कार दिए गये। 1981 ई. में 'कलाविद' की उपाधि से सम्मानित किया गया। शिक्षा व संस्कृति मंत्रालय दिल्ली द्वारा आपको विशिष्ट फैलोशिप प्रदान की गई। आपके चित्र देश के विभिन्न कला संग्रहालयों में सुरक्षित है। जीवन के अंतिम पड़ाव तक आप सहजतापूर्ण चित्रण कार्य करते रहे। बाल्यकाल से आपने जो कला यात्रा आरम्भ की वह 2005 ई. में निधन होने तक अनवरत जारी रही।

कृपाल सिंह शेखावत– (1922–2008)

कृपालसिंह शेखावत का जन्म श्री माधोपुर तहसील मे सन् 1922 में हुआ। आपकी शिक्षा पिलानी व लखनऊ में हुई। आपने कला की आरम्भिक शिक्षा भूरसिंह शेखावत से ग्रहण की। कला का विधिवत अध्ययन अपने शांति निकेतन में किया। श्री विनोद बिहारी मुखर्जी व नन्दलाल बोस के सानिध्य में सन् 1947 में आपने शांतिनिकेतन से कला डिप्लोमा प्राप्त किया तथा

ऑरियन्टल आर्ट, टोक्यो से भी डिप्लोमा ग्रहण किया।

कृपाल सिंह शेखावत राजस्थान के कला इतिहास में अपना विशेष महत्व रखते है। शांति निकेतन से शिक्षा ग्रहण किए जाने के फलस्वरूप आपकी कला पर बंगाल की शैली का प्रभाव आरम्भिक काल में अवश्य रहा, जिससे प्रभावित होकर अनेक चित्र वॉश पद्वति में बनाये, किन्तु आपने राजस्थानी लघु चित्रण शैली में अपनी प्रयोग धर्मिता से नवीन प्रभावों को सम्मिलित कर अपनी एक विशेष शैली की रचना की, जिसे कृपाल सिंह के नाम से पहचाना जाने लगा। (चित्र संख्या–6) इन्होने राजस्थानी लोक कला तथा जापानी चित्रकला का समायोजन अपनी शैली में किया। कृपाल सिंह शेखावत ने चित्र प्रचलित लघुचित्रों की अपेक्षा किंचित बड़े आकार के चित्र बनाये। अजन्ता के चित्रों के समान रेखाओं का सरल प्रवाह व गति, आकार गठन में देशज प्रभाव, प्राकृतिक चित्रण में विशेषतः चट्टानो तथा वृक्षों के तनों में जापानी गतिज तथा संवेदनशील रेखांकन इनकी चित्र शैली को परम्परागत लघु चित्र शैली से भिन्न स्वरूप प्रदान करते हैं।

कृपाल सिंह जी ने हाथी दांत तथा सिल्क पर भी चित्रण कार्य किया, किन्तु माध्यम के रूप में टेम्परा इनको विशेष प्रिय था। चित्रों में विवरणात्मक प्रस्तुति अत्यन्त रोचकता से हुई है।

आपने अनेक धार्मिक विषयों को अपने चित्रों में प्रस्तुत किया है जिनमें रामायण संबंधी चित्र, कृष्ण–यशोधरा, पाबूजी की फड़, बारहमासा, राग–रागिनी आपके प्रिय विषय रहे हैं।

कृपाल सिंह शेखावत ने लघु चित्रण शैली में जितनी ख्याति अर्जित की उतनी ख्याति 'ब्लू पॉटरी' में भी अर्जित की तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी पहचान स्थापित की।

भित्ति चित्रण तथा म्यूरल भी आपने अनेक स्थानों पर बनाये। बिड़ला हाऊस में ''लाईफ ऑफ गांधी' तथा 'भरत राम की चरण पादुका ले जाते' चित्र अत्यन्त लोक प्रिय हुए। इसके अतिरिक्त आपके चित्र कई स्थानों पर संग्रहीत है यथा – नेशनल गैलरी ऑफ मॉर्डन आर्ट, दिल्ली, ललित कला अकादमी दिल्ली, राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली, इन्दिरा गांधी हवाई अड्डा, दिल्ली, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, नेपाल के राजा का संग्रहालय, राष्ट्रपति भवन श्री लंका, विश्व बैंक न्यूयार्क, जापान आणविक ऊर्जा संस्थान जापान आदि।

चित्र संख्या–6 राधा (कृपाल सिंह शेखावत)

आपको भारत सरकार द्वारा 1974 में पद्मश्री तथा सन् 2002 में शिल्प गुरू से सम्मानित किया गया। इसके अलावा भी अनेक संस्थानों द्वारा सम्मानित किया गया जैसे कलकता आर्ट सोसाईटी द्वारा 1950 में आपको फैलोशिप प्रदान की गई। आपको सन् 1957 से 61 तक राजस्थान ललित अकादमी द्वारा पाँच बार पुरस्कृत किया गया। सन् 1967 में राष्ट्रपति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। सन् 1990 में इन्टरनेशनल क्राफ्ट कोंसिल न्यूयॉर्क द्वारा सम्मानित किया गया। आपने राजस्थान ललित कला अकादमी के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। कृपाल सिंह शेखावत राजस्थान के कला इतिहास में विशेष सम्मान के रखते हैं। आपने अनेक नये चित्रकारों को दीक्षित किया तथा राजस्थान में कला की श्रेष्ठ परम्पराएँ स्थापित की। सन् 2008 को यह महान् चित्रकार इस संसार से विदा हो गया।

द्वारका प्रसाद शर्मा – द्वारका प्रसाद शर्मा अपने आरम्भिक काल में पाश्चात्य शैली में तैलीय रंगो द्वारा यथार्थवादी चित्रण बहुत श्रेष्ठ स्तर का करते थे परन्तु बाद के आधुनिक चित्र शैली के चित्रों का निर्माण शुरू कर दिया था। आपका जन्म सन् 1922 में, बीकानेर में हुआ था। पिता के संगीत साधक होने तथा इनका ननिहाल उस्ता चित्रकारों के मौहल्ले में होने से इनका आकर्षण सहज ही कला की तरफ हो गया। आरम्भिक काल में आपकी कला शिक्षा जर्मन

चित्र संख्या–7 घोड़ा (द्वारका प्रसाद)

कलाकार ए. एच. मूलर के सानिध्य में हुई। मूलर बीकानेर रियासत के राजसी कलाकार थे तथा पेचवर्क में यथार्थ चित्रण में पारंगत थे। इनकी शिक्षा का प्रभाव ही था कि द्वारका प्रसाद का रेखांकन तथा पेचवर्क में हाथ सधा हुआ था। घोड़े बनाना द्वारका प्रसाद को विशेष प्रिय था। घोड़ो के चित्रण में आनुपातिक व सुडौलपन देखते ही बनता है।(चित्र संख्या–7)

युवावस्था में आपने व्यक्ति चित्रण तथा मंदिर सज्जा का कार्य काफी समय तक किया तथा बाद में सवाई मानसिंह चिकित्सा महाविद्यालय में कलाकार पद पर नियुक्त हो गये। यहाँ पर आपने लंबे समय तक कार्य किया। द्वारका प्रसाद यथार्थवादी चित्रकार होते हुए भी आधुनिक चित्र परम्पराओं में बहुत रूचि रखते थे तथा अपने चित्रों में नवीन अन्वेषण करते थे। आपके चित्र ''डूबी नौका'' तथा युगदर्शन को अकादमी पुरस्कार भी मिला। पारम्परिक पद्धति पर ''गौरीपूजा'' को भी पुरस्कार प्राप्त हुआ।

द्वारका प्रसाद समय समय पर पुरस्कृत होते रहे। राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा पांच बार राज्य पुरस्कार से सम्मानित हुए। आईफेक्स ने अनुभवी चित्रकार के रूप में सम्मानित किया। आपको सज्जनसिंह सम्मान भी प्रदान किया गया। आप जयपुर में इन्डियन इन्स्टिट्यूट ऑफ क्राफ्ट एण्ड डिजाईन के संस्थापक कलाकार रहे हैं। राजस्थान ललित कला अकादमी सहित नॉर्थ सेन्ट्रल जोन तथा उत्तर पश्चिम जोन सांस्कृतिक केन्द्र के सदस्य भी रहे। आपका बीमारी के चलते सन् 2009 में देहांत हो गया।

रत्नाकर विनायक साखलकर –

रत्नाकर विनायक साखलकर का जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरी स्थान पर 1918 ई. में हुआ था, वहीं पर उनकी प्रारंभिक शिक्षा भी हुई। आपने कानून की उच्च शिक्षा ग्रहण की, परन्तु कला क्षेत्र में गहन रूचि होने के कारण जे. जे. स्कूल आर्ट, मुम्बई से आर्ट की मास्टर डिग्री प्राप्त की, जी. डी. (आर्ट) की उपाधि प्राप्त की तथा तत्पश्चात् 1953 ई. में एम. एड. करके दयानन्द महाविद्यालय, अजमेर में प्राध्यापक के रूप में कार्य आरम्भ किया।

र. वि. सांखलकर की कला इतिहास में विशेष रूचि रही। राजस्थान में कला आन्दोलन को अपने विचार से आन्दोलित किया। आपने परम्परागत कला परम्पराओं का विश्लेषण कर नई पीढ़ी को इससे अवगत कराया। साखलकर कला को दैवीय उपासना से जोड़ कर देखते थे। कला का सौन्दर्यगत भाव ईश्वर प्रदत शक्ति के रूप में स्वीकार करते थे। आपने कला निर्माण प्रक्रिया को दो भिन्न स्वरूप में विश्लेषित

चत्र संख्या–8 होप एण्ड डिस्पेयर 21 सेन्चुरी (आर.वी. साखलकर)

किया। प्रथम प्रक्रिया उनके अनुसार कलाकार की निजी प्रतिभा पर आधारित होती है, जिसे वह कला तत्व के आधार पर चित्र भूमि पर उभारता है। दूसरी प्रक्रिया कला पर आरोपित होती है, जो विषयगत सादृश्यता को लिए हुए होती है। वह कला के विशद् सामान्य स्वरूप को विशेष तत्व से जोड़ देती है। यह विशेष तत्व ही कला में भावाभिव्यंजना का आधार बनता है। सांखलकर ने दोनों प्रक्रिया का सामंजस्य स्थापित कर भाव के

साथ सौन्दर्य का समागम करने पर आवश्यक विश्लेषण प्रस्तुत किया। भावना तथा रूप समन्वय स्थापित कर ही सार्थक रूप की सर्जना की जा सकती है। यह सार्थक रूप कलाकार की गहरी संवेदना तथा उसके सौन्दर्य बोध पर आधारित होता है। (चित्र संख्या–8)

र.वि.सांखलकर ने कला के श्रेष्ठ विवेचनकर्ता तथा श्रेष्ठ चित्रकार के रूप में ख्याति प्राप्त की। अपने चित्रण के आरम्भिक काल में यथार्थ चित्रण से प्रभावित होकर चित्रण किया किन्तु बाद में आधुनिक चित्रकला की उतरोत्तर विकास अवस्था के साथ स्वयं को समर्पित कर दिया। आपको केन्द्र तथा राज्य द्वारा श्रेष्ठ चित्रकार का सम्मान दिया गया परन्तु आपकी विशद् परिचयात्मक उपस्थिति एक शिक्षक, कला समीक्षक तथा कला इतिहास मर्मज्ञ के रूप में होती है। आपने कला इतिहास पर अनेक श्रेष्ठ पुस्तकों का लेखन कार्य किया है। आपके द्वारा चित्रजगत को दिये गये विशेष सहयोग को कला जगत में बड़ी सराहना मिली। 1989 में राजस्थान ललित कला अकादमी ने कलाविद की उपाधि से आपको सम्मानित किया।

पी. एन. चोयल–

परमानन्द चोयल का जन्म सन् 1924 ई. में कोटा जिले में हुआ। आपका राजस्थान की आधुनिक कला में विशेष महत्व है। आपकी प्रयोगधर्मिता से राजस्थान की कला के विकास को सशक्त सम्बल मिला आरम्भिक काल में आपने बंगाल स्कूल से प्रभावित होकर चित्रण कार्य आरम्भ किया लेकिन कला की विविधताओं को आत्मसात करते हुए सृजनात्मक कलाकार के रूप में अपनी पहचान स्थापित की

चित्र संख्या–9 (परमानन्द चोयल की एक कृति)

तथा अपनी परिपक्व शैली को स्थापित किया।

आपने् सन् 1948 ई. में महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट से चित्रकला का डिप्लोमा प्राप्त किया। जहाँ शैलेन्द्रनाथ डे तथा रामगोपाल विजयवर्गीय के शिष्यत्व में वॉश एवं टेम्परा शैली में अनेक चित्र बनाये। जिन पर पुनर्जागरण कालीन बंगाल शैली का प्रभाव रहा। बाद में आगे शिक्षा प्राप्त करने हेतु जे.जे.स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई से आर्ट डिप्लोमा का अध्ययन किया। 1953 ई. में डिप्लोमा प्राप्त करने के पश्चात् इनकी कला में अपेक्षित परिवर्तन आरम्भ हुआ तथा टेम्परा व तेलरंगों में कार्य करना आरंम्भ किया। आपके जीवन दर्शन पर पाश्चात्य चित्रकार वान गॉग का प्रभाव था। यथार्थवाद की जगह भावाभिव्यक्ति को अधिक महत्व देने लगे। वान गॉग के चित्र 'धान के खेत पर कौवे' की तर्ज पर 'झोपड़ें के कौवे' चित्र भी बनाया तथा वान गॉग पर एकांकी लेखन किया व उसका निर्देशन भी किया। साठ के दशक में तैल चित्रण को अपना प्रभावी माध्यम बना लिया। तैल रंगो का पतला व पारदर्शी रूप में प्रयोग करना आपकी विशेषता मानी जाने लगी। तूलिका संचालन की स्फूर्तिमान गति चित्रों को सजीव बना देती थी। इस काल में भैंसो के चित्रण की श्रृंखला बना डाली, रेखांकन व तैल चित्रण में इन श्रृंखलाओं को इतनी ख्याति मिली की आपको ''भैंसों का चित्रकार'' कहा जाने लगा। 1960 में आपको राजस्थान ललित कला अकादमी का राज्य पुरस्कार भी प्राप्त हुआ, जो चित्र भैंसे पर ही बना था। आपने स्त्री चित्रण को अधिक महत्व दिया। स्त्रियों की भावात्मक पक्ष व पीड़ा आपकी भावुकवृत्ति से विशेष आग्रह के साथ प्रस्तुत हुई। ''शिशु व माँ' के रूप में आपने कई भावपूर्ण चित्र बनाये।

आप ग्राफिक/छापाकला व तैल चित्रण में विशेष अध्ययन हेतु 1961 में स्लेड स्कूल ऑफ लन्दन गये। वहाँ पर आपने शारीरिक गठन शीलता का वैज्ञानिक रीति से अध्ययन किया। वहाँ पर कार्य करते आपके चित्रों में विवरणात्मक सूक्ष्मता अधिक सशक्त ढंग से चित्रों में उभर कर आने लगी परन्तु आप भावात्मक पक्ष से विशेष आग्रह रखते थे। (चित्र संख्या–9)

चित्रों में भावात्मक अभिव्यक्ति के साथ शारीरिक गठनशीलता को मिश्रित कर एक सशक्त शैली की रचना की जो इनकी विशेष शैली के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

आपने राजस्थान के परम्परागत मूल्यों की पुनर्स्थापना हेतु एक श्रृंखला की रचना की जो राजस्थान की प्राचीन भग्नावशेषों तथा पुरानी खण्डहरनुमा हवेलियों तथा राजप्रासादों पर आधारित थी। इन चित्रों में कौवों के स्थान पर गिद्धों को चित्रित किया गया है, जो जीवन की निस्सारता के प्रतीक हैं। पी.एन.चोयल ने विभिन्न चित्र श्रृंखलाओं की रचना की जो किसी विशेष प्रयोजन के लिए होती थी।

समाज की पीड़ा को दर्शाती एक श्रृंखला 'खिड़की' बनाई जिनमें मेरी गली के आस–पास, उदयपुर की गली, चित्तौड़, दो नारियाँ, आदि उल्लेखनीय हैं। खिड़की श्रृंखला में नारी के असहाय व पीड़ा भरे जीवन को झांकते दिखाया गया। एक अन्य चित्र श्रृंखला ''परसेप्शन ऑफ उदयपुर'' में सामाजिक विषयों को आधार बना कर जनमानस की पीड़ा व भावात्मक पहलू को सुन्दरता के साथ चित्रित किया गया है। इन्होनें अपने चित्रों में संयोजन को नवीन दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया तथा तैलरंगो को जल रंगो की तरफ पारदर्शिता से प्रयुक्त कर चित्रों को नवीन रूप प्रदान किया। पी.एन.चोयल ने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की। इन्होंने भारत सहित अनेक देशों यथा जापान, रूस, साओवियालो, लिस्बन, क्यूबा, अल्जेरिया आदि स्थानों पर अपने चित्रों को प्रदर्शित किया। आपको 1988 में ललित कला आकदमी दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया। राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा छः बार राजकीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2007 में ललित कला अकादमी दिल्ली द्वारा 'कला रत्न' की उपाधि प्रदान की गई।

परमानन्द चोयल ने लम्बे समय तक मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में कला शिक्षक के रूप में राजस्थान के कला विद्यार्थियों को तराशा। राजस्थान में समकालीन कला एवं कलाकारों की स्थापना में आपकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सन् 1984 में आप रिटायर्ड होने के पश्चात् भी अपनी सृजन यात्रा को आगे बढ़ाते रहे जो सन् 2012 में देहावसान के साथ समाप्त हुई।

सुरेश शर्मा (1937) –

राजस्थानी आधुनिक चित्रकला में सुरेश शर्मा एक अमूर्त चित्रकार के रूप में प्रतिभा सम्पन्न कलाकार समझे जाते हैं। आपका जन्म 1937 में कोटा में हुआ। बचपन से ही कला में रूचि होने के कारण वे कला शिक्षा हेतु प्रयास करते रहे, तथा शांति निकेतन से आपने आर्ट एण्ड क्राफ्ट में 1962 में डिप्लोमा प्राप्त किया। आपने नन्दलाल बोस, रामकिंकर बैज तथा विनोद बिहारी मुखर्जी के साथ रहकर कला की बारीकियों का अध्ययन किया। कला को अपनी अभिव्यक्ति प्रदान करने में सुरेश शर्मा ने नवीन प्रयोग किए तथा अमूर्त चित्रण के प्रति आकर्षित होकर भावों को सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त करने लगे।

कला में अथाह संभावनाओं को देखते हुए उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए विदेश का रूख किया, जहाँ ब्रुकलिन म्यूजियम आर्ट स्कूल अमेरिका से कला शिक्षा प्राप्त की तथा ग्राफिक कला के अध्ययन हेतु ब्रेट इन्टरनेशनल ग्राफिक सेन्टर न्यूयार्क में प्रवेश लिया। यहाँ पर ग्राफिक संबंधी पद्वतियों का गहनता से अध्ययन किया।

सुरेश शर्मा ने अपनी कृतियों को ''शीर्षक विहिन'' रखकर

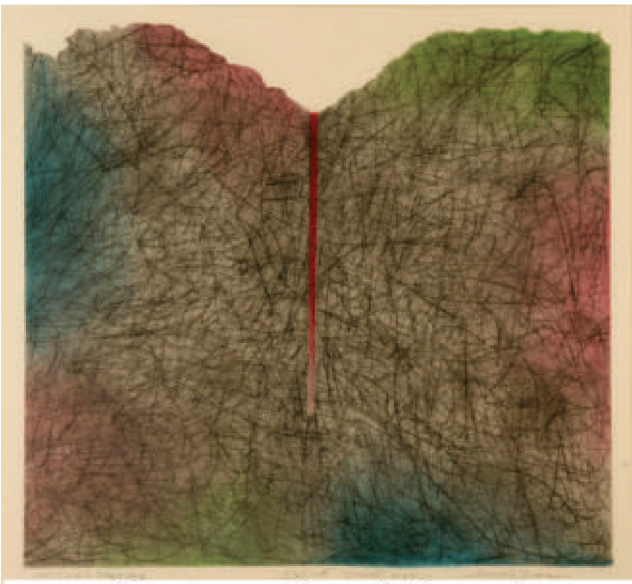

चित्र संख्या–10 सुरेश शर्मा की एक कृति

प्रदर्शित किया। इन चित्रों में ज्यामितिक अलंकरण, सीधी रेखाएं प्रयुक्त कर अन्तराल की अनन्त अनुभूति तथा गहराई की प्रगाढ़ता का बहुत ही सुन्दरता के साथ प्रस्तुत किया है। चित्रों में प्रायः नीली आभा विद्यमान रही है, कभी कभी हरे रंग को भी विस्तार मिला है। अमूर्त चित्रण के साथ आपने राजस्थान की छापा कला को भी नई चेतना प्रदान की। छापा चित्रों में विभिन्न माध्यमों के प्रयोग से कई प्रकार के प्रारूप एवं पोत प्रस्तुत किए। आपने छापा

चित्रकार के रूप में विशेष ख्याति प्राप्त की। (चित्र संख्या–10)

रविन्द्र भवन, दिल्ली में सन् 1973 व 1979 में एकल प्रदर्शनी का आयोजन किया, सन् 1992, 2006, 2011, 2016 में श्रीधाराणी गैलरी में चित्र प्रदर्शित किए। सन् 1981 व 1983 में जापान में अपने चित्रों को प्रदर्शित किया। राजस्थान ललित कला अकादमी ने भी आपको राजकीय पुरस्कार प्रदान किया तथा 1985 में ''कलाविद'' से विभूषित किया गया। 1984 में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी दिल्ली के सदस्य भी मनोनित हुए। चतुर्थ बिनाले में भी आपकी सहभागिता रही। इन्टरनेशनल कन्टम्पररी आर्ट एक्जीबिशन जापान में आपके चित्र प्रदर्शित किये गये तथा इन्डो जर्मन आर्ट कैम्प मे भी आपने भाग लिया। राष्ट्रीय ललित कला अकादमी द्वारा 2012 में 'कला रत्न सदस्यता' और राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 2015 में लाईफ टाईम अचिवमेंट अर्वाड से सम्मानित किया गया। आपने सुखाड़िया विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग में लंबे समय तक प्राध्यापक पद पर रहते हुए युवा चित्रकारों को शिक्षित किया ।

चित्र संख्या–11 वियोगी शिव (राम जयसवाल)

राम जैसवाल – सहज एंव सरल हृद्य के प्रतिभाशाली कलाकार राम जैसवाल का जन्म उत्तरप्रदेश के सादाबाद स्थान पर हुआ जो मथुरा जिले में है। आपने चित्रकला की विधिवत शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्टस, लखनऊ में कलाकार के रूप में कार्य करना आरम्भ किया। कुछ समय तक मेरठ महाविद्यालय में प्राध्यापक पद पर कार्य किया। सन् 1964 में आप अजमेर आ गये तथा कला प्राध्यापक के रूप में दयानन्द कॉलेज में कार्य करने लगे। सेवानिवृत्ति के पश्चात् आज भी कला सृजन में ऊर्जा के साथ संलग्न हैं।

राम जैसवाल का आरम्भिक काल लखनऊ व मेरठ में गुजरा था। वहाँ आपका सान्निध्य असित कुमार हलदार, सुधीर रंजन, खास्तगीर, व श्रीधर महापत्र जैसे श्रेष्ठ कलाकारों के साथ रहा। इस काल में समस्त भारत पर पुनर्जागरण कालीन बंगाल स्कूल का प्रभाव था। पौराणिक विषयों को लेकर वॉश तकनीक में चित्रण की परम्परा जोर पर थी। आपकी कला में भी भारतीय परम्परा अपने काव्यात्मक माधुर्य के साथ अभिव्यक्त हुई। आप द्वारा वॉश तकनीक में किए गए चित्रण में परम्परागत विषयों की आध्यात्मिक एवं काल्पनिक प्रस्तुति है। विशेषतः आपके चित्र बंदी, वियोगी, अतीत विशेष उल्लेखनीय है। प्रकृति चित्रण आपके अद्‌भुत कौशल के परिचायक है, वेट टू वेट पद्वति से जलरंगो द्वारा प्रकृति को चित्रित करने में आपका कौशल अद्वितीय रहा है। गोमती के तट, रेजिडेन्सी, वियोगी शिव आदि ऐसे ही चित्र है। (चित्र संख्या–11)

अजमेर आने के बाद जल रंग के चित्रण में विविधताएं उभर कर आने लगीं, विभिन्न ऋतुओं तथा मौसम, पहाड़ी, जंगल, झरने, झीलों की मनोरम छटाएं आपके चित्रों में बिखरने लगीं। न केवल जल रंग अपितु टेम्परा में भी आपने श्रेष्ठतम् चित्र सृजन किया है, जिनमें स्ट्रीट सींगर, प्रणय, आंगन की दोपहरी, पूजा का दिन विशेष उल्लेखनीय है।

आप अति संवेदनशील कलाकार है, जीवन की विषमताए, त्रासदी सांस्कृतिक क्षीणता आपको उद्वेलित सहज ही कर देते हैं, जिनसे प्रभावित होकर भी आपने अपने चित्रों का निर्माण किया जैसे नीतिज्ञ, अवैध तथा खण्डित संस्कृति आदि। आप न केवल चित्रकार के रूप में ख्यातिनाम व्यक्ति है अपितु

आप एक साहित्यकार के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। आपने काव्य संग्रह तथा कहानी संग्रहों का लेखन भी किया है।

राजस्थान की समकालीन कला–

राजस्थान में अग्रणी वरिष्ठ चित्रकारो ने राजस्थान की कला को दिशा प्रदान की वह निरन्तर विकास को अग्रसर होती रही कई प्रतिभा सम्पन्न कलाकार इस कलायात्रा में सम्मिलित होते गये। अपने अमूर्तन चित्रण को श्वेत श्याम रूप से केनवास पर उतारने में सिद्धहस्त विद्यासागर उपाध्याय, छापांकन कला के साथ लक्ष्मीलाल वर्मा, छापांकन एवं म्यूरल चित्रण में सी. एस. मेहता अमूर्त चित्रण में ज्योति स्वरूप शर्मा ने योगदान दिया। चित्रों की बारीकी व सुगठित संयोजन के साथ तैल चित्रण तथा छापांकन कला में शैल चौयल ने चित्रों को ताजगी के साथ प्रस्तुत किया। लघुचित्रण को आधार बनाकर नवीन संयोजन एवं संगति के चित्रकारो में कन्हैया लाल वर्मा, नाथूलाल वर्मा, समन्दर सिंह उल्लेखनीय है। सृजनशील रचनाधर्मिता तथा नवीन अन्वेषण के साथ मोहन शर्मा, शब्बीर हसन काजी, दिलीप सिंह चौहान, आर.बी.गौतम, महेन्द्र कुमार शर्मा, ललित शर्मा, आदि ने ख्याति अर्जित की महिला चित्रकारो में कुमारी प्रभाशाह, दीपिका हाजरा, किरण मुर्डिया, ईला यादव आदि ने समकालीन कला में अपना योगदान प्रदान किया।

कुछ युवा चित्रकार अपने नवीन तकनीक व प्रारूप द्वारा कला को नये आयाम प्रस्तुत करने में कृत संकल्प रहे, जिनमें सुनीत घिल्डियाल, एकेश्वर हटवाल, सुरेन्द्र जोशी, गगन बिहारी दाधीच, रामेश्वर सिंह राजीव गर्ग, अब्बास बाटलीवाला, विष्णु माली, हेमन्त द्विवेदी, दीपक भारद्वाज, जगमोहन माथोडिया, मदनसिंह राठौड़, विजय जोशी, दीपक भट्ट, महिला चित्रकारों में सुरजीत कौर चोयल, मीना बया, मीनाक्षी कासलीवाल, वीरबाला भावसार, मीनू श्रीवास्तव, रीता प्रताप, पुष्पा दूल्लर, इन्दूसिंह, रेखा पंचौली, कृष्णा महावर, आदि उल्लेखनीय है।

राजस्थान की कला वर्तमान में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान स्थापित कर चुकी है। राजस्थान के अनेक समकालीन चित्रकार राष्ट्रीय स्तर चित्र सृजन में सहभागिता निभा रहे हैं।

अभ्यास प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. राजस्थान में मदरसा ए हुनरी की स्थापना किसने की थी ?
2. महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट के प्रथम प्राचार्य कौन थे ?
3. राजस्थान में बंगाल स्कूल की प्रभाव किन कला अध्यापकों के कारण आया ?
4. बंगाल स्कूल शैली के चित्रों को प्रायः किस माध्यम में बनाया जाता था।
5. बिड़ला हाऊस, पिलानी में गांधीजी पर आधारित भिति चित्र किसने बनाये ?
6. रामगोपाल विजयवर्गीय का जन्म कब और कहां हुआ था ?
7. कृष्ण ब्रह्मा है और रासेश्वरी राधा माया'' कथन किस चित्रकार का है ?
8. ''शिव जी की अमेरिका यात्रा'' व्यंग रचना किसने लिखी ?
9. कृपाल सिंह शेखावत ने आरम्भिक कला शिक्षा किससे प्राप्त की ?
10. राजस्थान में ब्लू पोटरी निर्माण एवं चित्रण के प्रतिनिधि चित्रकार कौन है ?
11. रत्नविनायक सांखलकर राजस्थान के किस महाविद्यालयमें कला शिक्षण देते थे ?
12. राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा किस चित्रकार पर सन 1995 में लघु फिल्म बनाई गई ?
13. देवकी नन्दन शर्मा कला शिक्षक के रूप कहां शिक्षण करवाते थे ?
14. "बाबा" नाम से कौनसे चित्रकार प्रसिद्ध थे, जिन्हे ''भीलो का चितेरा'' भी कहा जाता है ?
15. "परसेप्शन ऑफ उदयपुर" चित्र श्रृंखला किसने रची ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. द्वारका प्रसाद शर्मा की चित्रण तकनीकी क्या थी एवं वे किस माध्यम में मुख्यतः कार्य करते थे ?
2. राम जैसवाल ने आरम्भिक काल में किन बंगाली चित्रकारो से चित्रकला का प्रशिक्षण लिया ?
3. सुरेश शर्मा ने ग्राफिक कला का उच्च प्रशिक्षण कहां से लिया ?
4. राजस्थान में बंगाल स्कूल के किन कलाकारों ने आधुनिक कला के विकास में अपना योगदान दिया ?

5. आधुनिक काल के ''लघु चित्रण शैली'' से प्रेरित किन्हीं दो चित्रकारों के नाम बताओ।
6. राजस्थानी आधुनिक शैली के उद्‌भव में कौन कौन सी प्रवृत्तियां महत्वपूर्ण थी ?
7. रामगोपाल विजयवर्गीय के धार्मिक विषय के प्रमुख चित्रों के नाम क्या थे ?
8. ब्लू पोटरी क्या है, इसके प्रमुख रचनाकार कौन हैं ?
9. गोवर्धन लाल जोशी ने अपना रेखांकन प्रायः किन विषयों पर किया है ?
10. पी.एन.चौयल किस युरोपीय चित्रकार से प्रभावित थे और क्यों ?

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. रामगोपाल विजयवर्गीय की कला की समीक्षात्मक व्याख्या करते हुए राजस्थान की आधुनिक कला में उनके योगदान को उल्लेखित कीजिए।
2. कृपालसिंह शेखावत के व्यक्तित्व की व्याख्या करते हुए उनके चित्रों की कलात्मक समीक्षा कीजिए।
3. पी.एन.चोयल की कला के विषय बताते हुए उनकी कला की विशेषताएं बताईये।
4. बी.सी.गुई के जीवन एवं कृतत्व पर प्रकाश डालिये।
5. राजस्थान की आधुनिक शैली के आरम्भ में बंगाल स्कूल का क्या प्रभाव रहा, विस्तृत व्याख्या कीजिए।